रेड फ्लैग के ''वैचारिक सयानेपन'' का जवाब

रेड फ्लैग द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'लाल तारा', जिसे रेड फ्लैग कम्युनिस्ट क्रान्तिकारियों का मंच बताता है, के अप्रैल-मई 1999 के अंक में सी.एल.आई. के बारे में मिथ्यापूर्ण व गलत आरोप लगाते हुए ''सी.एल.आई. का वैचारिक दिवालियापन'' नामक शीर्षक से एक मुख्य आलेख व CLI के एक ग्रुप पर एक अन्य उपलेख ''सी.एल.आई. का गैर जनवादी व्यवहार'' नाम से रैड फ्लैग ने छापे हैं। यहाँ मुख्य लेख पर ही हम अपना ध्यान केन्द्रित करेंगे।

रैड फ्लैग, CLI के ''वैचारिक दिवालियापन'' को साबित करने के लिए जिस पद्धति का सहारा लेता है वह कहीं से भी क्रान्तिकारी पद्धति नहीं है। क्रांतिकारी पद्धति का तकाजा है कि आप तथ्यों में गोलमाल न करें, अपने से भिन्न मत व धारणा रखने वाले के मुँह में वे बातें न ठूसें जो उन्होंने कही न हों, झूठ न बोलें तथा अपनी पीठ अपने ही हाथों से न थपथपायें। क्रान्तिकारी पद्धति हमें सिखलाती है कि हम अपने विरोधी के विचारों की क्रान्तिकारी ढंग से चीर-फाड़ करें तथा सर्वहारा के हितों को साधने वाले विचारों, कार्यक्रमों को स्पष्ट तौर पर सामने ला दें। हमें अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है कि रेड फ्लैग ने क्रान्तिकारी पद्धति का परिचय न देकर क्रान्तिकारी आन्दोलन में गलत मिसाल कायम की है।

रेड फ्लैग की गलतबयानी, सी.एल.आई. के जन्म की उनकी तथाकथित कहानी के साथ शुरु हो जाती है। रेड फ्लैग का कहना है ''... यह संगठन दावा करता है कि वह नक्सलबाड़ी संघर्ष की ऐतिहासिक कड़ी है जिसका गठन 1980 दशक के पूर्वार्ध में उस समय हुआ था, जब भारत के कई सारे राज्यों में धनी किसानों के नेतृत्व में किसान आन्दोलन उभरने लगा था जिसकी वजह से एक बार फिर से भा.क.पा. (मा.ले.) के विभिन्न गुटों के अन्दर भी इस बात पर चर्चा शुरु हुई। इसी बात को लेकर सी.ओ.सी., सी.पी.आई. (एम.एल.) से टूट कर कुछेक बुद्धिजीवियों का एक धड़ा अलग हो गया और उन लोगों से सी.एल.आई. का गठन किया। यह हिस्सा इस निष्कर्ष पर पहुँचा था कि भारत में पुराने सामंती, अर्द्ध-सामंती या प्राक्-पूंजीवादी उत्पादन सम्बन्धों में तेजी से बदलाव आ रहा है तथा भारतीय कृषि क्षेत्र का एवं यहाँ के वर्ग सम्बन्धों का नये सिरे से विश्लेषण करने की जरुरत है।''

सी.एल.आई. के जन्म की यह कहानी लगता है किसी ज्योतिषी द्वारा अपने पंचाग की गणनाओं के आधार पर तैयार की गई है। क्रान्तिकारी आन्दोलन की जानकारी रखने वाला, ऐसी वाहियात बात करने से पहले, दस बार सोचेगा और तथ्यों की जानकारी के अभाव में तथ्यों को गढ़ेगा नहीं, बल्कि उन्हें निष्ठापूर्वक प्राप्त करने के बाद ही कोई ठोस व निश्चित बात कहेगा। CLI का गठन 1980 के दशक के पूर्वार्द्ध में नहीं बल्कि फरवरी 1978 को हुआ था। यह संगठन इससे पूर्व COC, CPI (ML) का हिस्सा था। COC, CPI (ML) में जिन महत्वपूर्ण बातों को लेकर संघर्ष तीखा हुआ था, उनमें CPI (ML) के गठन व निर्माण का सवाल, भारत के कम्युनिस्ट आन्दोलन के विगत इतिहास का आंकलन, देश में वर्गीय शक्तियों के सन्तुलन की स्थिति और तात्कालिक कार्यभार, संसदीय चुनावों की उपादेयता, अतिवामपंथी दुस्साहसवादी लाइन, भारत में 1975 में लगे आपातकाल के पूर्व सीमित जनवाद की मौजूदगी का सवाल इत्यादि। 1978 में गठित CLI ने भारतीय समाज का विश्लेषण अर्द्धसामन्ती-अर्द्धऔपनिवेशिक समाज के रूप में किया था तथा क्रान्ति की मंजिल को नवजनवादी चिन्हित किया था। तभी प्रकाशित CLI के मुखपत्र लाल तारा-1 में उपरोक्त सभी बातों की चर्चा है तथा उस वक्त स्वीकार किये गये पार्टी कार्यक्रम को दिया गया है।

धनी किसान आन्दोलनों के प्रभाव में कुछ बुद्धिजीवियों द्वारा CLI के गठन की बात रेड फ्लैग किस मंतव्य से करता है यह समझना मुश्किल नहीं है। लेकिन यह गतलबयानी इसी तथ्य से स्पष्ट हो जाती है कि CLI ने 1978 में अपने गठन के बाद लगातार 5 वर्षों तक नवजनवादी क्रान्ति की मंजिल की लाइन को ही आधार बनाकर कार्य किया। इससे पहले, COC, CPI (ML) के जमाने में भी इसी लाइन को आधार बनाकर कार्य किया गया था। समग्र आन्दोलन के अनुभव, 1978 के पूर्व तथा बाद में व्यवहार के दौरान, यह सवाल उठ खड़ा हुआ कि धनी किसान हमारा ढुलमुल वर्ग मित्र भी नहीं बल्कि वर्ग शत्रु है और जमीन्दार-सामन्त भी पूंजीवादी भूस्वामी बनते जा रहे हैं। 1983 में CLI, लाल तारा-2 में अपने अनुभवों से तथा 1947 के बाद पूरे देश के 36 वर्षों के व्यापक अध्ययन के बाद, इस नतीजे पर पहुँची कि भारत में क्रान्ति की मंजिल नवजनवादी न होकर समाजवादी होगी। इसका एक मतलब यह है कि धनी किसान क्रान्ति का ढुलमुल दोस्त नहीं, वरन दुश्मन है। दरअसल, धनी किसानों के प्रभाव में CLI नहीं है बल्कि कई अन्य मित्र हैं जो इस प्रतीक्षा में हैं कि कभी न कभी वे धनी किसान को क्रान्ति के पक्ष में खड़ा कर ले जायेंगे। स्वयं रेड फ्लैग को इस सवाल के बारे में पुनः पुनः विचार करना चाहिये। भारत में वर्गीय स्वरूप तथा कृषि सम्बन्धों में आये परिवर्तन की चर्चा धनी किसान आन्दोलन के प्रभाव में होने के कारण प्रारम्भ हुई, यह धारणा गलत है तथा भ्रम फैलाने वाली है। रेड फ्लैग क्रान्तिकारी जिम्मेदारी से मुंह मोड़कर, बहुत ही ओछेपन से CLI को धनी किसानों का पिच्छलग्गू घोषित कर जब ये दावा करता है कि वो CLI में से सकारात्मक तत्वों को अपने में शामिल कर लेगा तो वो इससे केवल अपने कार्यकर्ताओं व सम्पर्कों को झूठी दिलासा व उत्साह ही दिला सकता है। जो कि सत्य व क्रान्तिकारी व्यवहार के आधार के बिना, ज्यादा दिन चल भी नहीं सकेगा।

CLI जब ये कहती है कि भारत में पुराने कृषि सम्बन्ध बदल चुके हैं, कि भारत में प्राक् पूंजीवादी सम्बन्धों के स्थान पर पूंजीवादी सम्बन्ध कायम होते जा रहे हैं तो रेड फ्लैग इसे धनी किसान आन्दोलन का प्रभाव कहता है। इसी रेड फ्लैगी तर्क पद्धति के आधार पर चले तो चूंकि रैड फ्लैग यह कहता है कि ''यदि हम विभिन्न इलाकों के और समग्रता से पूरे भारत की ठोस परिस्थितियों को देखें और उसका ठीक-ठाक विश्लेषण करें तो पायेंगे कि देश के विशाल इलाकों में पुराने सम्बन्ध टूट चुके हैं और टूटने की यह प्रक्रिया आज भी तेजी के साथ जारी है। उसकी जगह नये उत्पादन एवं वर्ग सम्बन्धों ने ले लिया है। मगर यह तस्वीर का मात्र एक पहलू है, अर्धसत्य है। पूरी सच्चाई और तस्वीर का दूसरा पक्ष यह है कि भारत में उत्पादन की विधि एवं वर्ग सम्बन्ध में यह जो बदलाव आया है और आ रहा है वह साम्राज्यवादी पूंजी के वर्चस्व में मातहत हो रहा है'', स्वयं रेड फ्लैग साम्राज्यवादी प्रभाव में हो जायेगा। लेकिन हम ऐसा नहीं कहेंगे कि यह रैड फ्लैग पर साम्राज्यवाद का प्रभाव है। हम ऐसी गैर क्रान्तिकारी पद्धति को अस्वीकार करते हैं। हम यहाँ पर यह कहेंगे कि परिवर्तन को स्वीकार करने के बाद भी रेड फ्लैग गलत नतीजों पर पहुँचता है और 1963 की जरनल लाइन के आंकलन को आज भी पूजता है और भारत की आन्तरिक वर्गशक्तियों को नहीं पहचान पाता है। भारत की बुर्जुवाजी के कारनामों को नहीं समझ पाता है, जो कि उसके हिसाब से भारतीय बुर्जुआ ने अपने हित में नहीं बल्कि महामहिम कृपालु साम्राज्यवाद ने किये हैं। क्या नौ सौ चूहे खाने के बाद साम्राज्यवाद पचास से नब्बे के दशक के बीच हज की यात्रा पर चल पड़ा था। नब्बे के दशक में आये परिवर्तनों को समझने के लिये रेड फ्लैग को और अधिक जादुई शाब्दिक बाजीगरी दिखलानी पड़ेगी।

रेड फ्लैग CLI पर यह झूठा आरोप लगाता है कि उसने साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष को त्याग दिया है और उसके कार्यक्रम में साम्राज्यवाद सिरे से गायब है। वह यह भी गलत आरोप लगाता है कि CLI साम्राज्यवादी प्रभुत्व के अधीन देशों में पूंजी के गति के नियमों को भी जानने समझने के लिए तैयार नहीं है। CLI पर इसके साथ ही वो मार्क्सवाद की यान्त्रिक समझ का आरोप भी जड़ देता है। रेड फ्लैग का रवैया यहाँ पर पुनः-पुनः गैर क्रान्तिकारी है। हम रेड फ्लैग को इस बात के लिये आश्वत करना चाहेंगे कि साम्राज्यवाद विरोधी कार्यभार को हम तब तक नहीं त्याग सकते, जब तक साम्राज्यवाद दुनिया में मौजूद है। जहाँ तक साम्राज्यवाद का तीसरी

दुनिया से सम्बन्ध है, हम उसे 'आर्थिक नवउपनिवेशवाद' कहते हैं। आर्थिक इसलिए कि साम्राज्यवाद के शोषण उत्पीड़न के तरीकों में आर्थिक उपकरण आज प्रमुख स्थान ग्रहण कर चुके हैं और दबाब और प्रभुत्व के अन्य तरीके मौजूद होने के बावजूद गौड़ रुप धारण कर चुके हैं।

आज की विश्व पूंजीवादी परिस्थिति में यह अनोखी बाजार व्यवस्था क्या होती है, जिसके तहत पुराने सामन्ती सम्बन्धों में परिवर्तन आ रहा है और जो स्वयं पूंजीवाद भी नहीं है? साथ ही हम यह सवाल भी आपसे पूछना चाहेंगे कि जब भारतीय गांवों में बाजार व्यवस्था के तहत नये सम्बन्ध कायम होते जा रहे हों तो संघर्ष सामन्तवाद-विरोधी कैसे होगा, जिसकी आप अपने कार्यक्रम में जोर-जोर से घोषणा करते हैं। या फिर आपके अनुसार भारत के ग्रामीण इलाकों में मुख्य प्रतिक्रियावादी शक्ति सामन्त-जमींदार हैं, जिनके खिलाफ क्रान्तिकारी संघर्ष लड़ा जाना है, तो आप यह बतायें कि उनके वर्चस्व के कायम रहते ग्रामीण इलाकों में बाजार व्यवस्था कैसे कायम हो रही है? यह स्थापित बात है कि बाजार-व्यवस्था और सामन्तवाद, एक दूसरे को परस्पर बहिष्कृत करने वाली परिघटनाएं है।

जहाँ तक भारत के एक स्वतंत्र पूंजीवादी देश होने का सवाल है तो CLI ने कभी भी यह नहीं कहा है कि भारत साम्राज्यवाद के प्रभाव व दबाब से 1947 के बाद, कभी भी मुक्त रहा है। स्वतंत्र वह इसी मामले में है कि पूंजीपति वर्ग ने सत्ता-हस्तांतरण के द्वारा सत्ता हासिल की और तात्कालीन विश्व परिस्थिति का लाभ उठाकर क्रमशः अपनी सत्ता को सुदृढ़ किया। यह साम्राज्यवाद का ''दलाल'' नहीं है बल्कि अपनी ताकत व हैसियत के हिसाब से वैश्विक साम्राज्यवादी व्यवस्था में अपना स्थान रखता है, जोकि स्पष्ट तौर पर बराबरी का नहीं है।

आप जैसे मित्र यह मनगढ़न्त आरोप हम पर जड़ देते हैं कि हम साम्राज्यवाद को सिर्फ आर्थिक रूप में देखते हैं। जी नहीं! साम्राज्यवाद को हम एक समग्र एकीकृत व्यवस्था के रूप में देखते है, न कि खण्ड-खण्ड में बंटी व्यवस्था के रूप में। आप हमारी धारणा को समझने का प्रयास तो करते नहीं लेकिन विकृतीकरण की कोई कसर छोड़ते नहीं। ''उत्तर-उपनिवेशवाद'' का शब्द गढ़कर आप जबर्दस्ती उसे हमारे ऊपर मढ़कर, आत्मविभोर होकर, मोर की तरह नृत्य करने लगते हैं, भूलवश अपने पैरों की तरफ निगाह पड़ने पर आपको शायद कुरूपता का एहसास हो। जनाब, CLI विश्व साम्राज्यवादी व्यवस्था के दायरे के भीतर उत्तर-औपनिवेशिक काल (post-colonial period) की चारित्रिक विशेषताओं को देखने व उनका विश्लेषण करने का प्रयास तो करती है लेकिन साम्राज्यवाद के स्थान पर व उससे इतर उत्तर-उपनिवेशवाद (post- colonialism) जैसी बेतुकी थीसिस नहीं पेश करती।

रेड़ फ्लैग, CLI में फूटों के लिए यह बताता है कि उनके लिए रणनीतिक लाइन की अन्तर्विरोधी स्थिति जिम्मेदार है। लेकिन यह बात एकदम ही गलत है, CLI में हुई फूटों में रणनीतिक लाइन का सवाल कभी नहीं उठा है, CLI के सभी ग्रुप भारत के समाज का लगभग एक सा विश्लेषण करते रहे हैं और भारतीय समाज की क्रान्ति की मंजिल को समाजवादी मानते रहे है। फूटों में वैचारिक, सांगठनिक लाइन, कार्यशैली जैसे सवाल रहे हैं, लेकिन रणनीतिक लाइन का सवाल नहीं रहा है।

रैड फ्लैग एक झूठ यह भी गढ़ता है कि जनता के साथ जीवन्त सम्बन्ध वाले कार्यकर्त्ता साम्राज्यवाद के सम्बन्ध में उठने वाले सवालों व मुद्दों का सामना करने में मुश्किल महसूस करते हैं। यह अटकलबाजी इतनी बेहूदी है जिसका जवाब देना की हम आवश्यक नहीं समझते है।

ऐसे ही, CLI के एक ग्रुप द्वारा की गई किसी कार्यवाही के लिए पूरी ब्स्प् पर आरोप मढ़ना, उसी तरह से गलत होगा जिस तरह से CPI (ML) के किसी एक ग्रुप की कार्यवाही पर CPI (ML) के घटक रहे सभी संगठनों को जिम्मेदार ठहराना । स्वतंत्र संगठन होने के कारण किसी एक ग्रुप के द्वारा की गई कार्यवाही के लिए CLI के अन्य सभी ग्रुप किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं हैं। रेड फ्लैग गैर जनवादी व्यवहार का आरोप तो

CLI के ऊपर लगाता है, लेकिन खुद CLI के सभी ग्रुपों पर फतवेबाजी करके कैसे जनवादी व्यवहार करता है, यह समझ में नहीं आता।

रेड फ्लैग अपनी गैर क्रान्तिकारी पद्धति का प्रयोग CLI के साथ तो पूरे लेख में करता ही है लेकिन वो 1970 के पार्टी कार्यक्रम को मानने वाले क्रान्तिकारी गुटों को भी नहीं बख्शता। रेड फ्लैग 1970 के पार्टी कार्यक्रम पर सवाल खड़ा करता है और उसे एकांगी व अपूर्ण बताता है, फिर बगैर कोई ठोस बात कहे अपने कार्यक्रम को गलत पद्धति द्वारा सही ठहराता है। रेड फ्लैग यद्यपि दूसरे क्रान्तिकारी संगठनों पर धार्मिक भाव का आरोप लगाता है लेकिन खुद कहीं अधिक धार्मिक भाव से समाजवादी खेमे के समाप्त होने के बाद आज भी साम्राज्यवादी और समाजवादी खेमे के अन्तर्विरोध को वैश्विक स्तर पर चार प्रमुख अन्तर्विरोधों में से एक मानता है।

अन्ततः हम यही कहना चाहेंगे कि क्रांन्तिकारी व्यवहार का तकाजा है कि तथ्यों से सत्य की ओर प्रस्थान किया जाए, तथ्यों के आधार पर धारणा बनायी जाय न कि अपनी पूर्व धारणओं और पूर्वाग्रहों के आधार पर तथ्यों को निर्मित किया जाय। स्वस्थ सार्थक बहस तभी हो सकती है जब पूर्वाग्रहों से मुक्त हुआ जाए तथा धैर्यपूर्वक अपने से भिन्न मत रखने वालों की अवस्थितियों को समझा जाय और क्रांतिकारी साहस तथा जिम्मेदारी के भाव से उनका खण्डन-मण्डन कर सर्वहारा वर्ग के महान उद्देश्य की विनम्रतापूर्वक सेवा की जाये।

■ ■ ■